ग्रामीण शिशु मर्त्यता

एक भौगोलिक विश्लेषण

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

ग्रामीण शिशु मर्त्यता
एक भौगोलिक विश्लेषण

डॉ. टिके सिंह

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.in

ग्रामीण शिशु मर्त्यता : एक भौगोलिक विश्लेषण

Grameen Shishu Martyata : Ek Bhoogolik Vishlesan
by Dr. Tike Singh

आईएसबीएन : 978-81-19098-59-0
सर्वाधिकार : © डॉ. टिके सिंह
संस्करण : प्रथम, 2025, अप्रैल 25

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

विषय-सूची

	प्राक्कथन	*vii*
1.	भौगोलिक पृष्ठभूमि	1
2.	सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकीय पृष्ठभूमि	21
3.	शिशु मर्त्यता	29
4.	जनांकिकीय विशेषताएँ	38
5.	शिक्षा एवं शिशु मर्त्यता	48
6.	आर्थिक कारक एवं शिशु मर्त्यता	58
7.	सामाजिक कारक एवं शिशु मर्त्यता	67
8.	जन सुविधाएँ एवं शिशु मर्त्यता	72
9.	सारांश एवं निष्कर्ष	100
	Bibliography	*111*
	परिशिष्ट	*116*

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

यह पुस्तक ग्रामीण जनसंख्या में शिशु मर्त्यता के स्थिति का आकलन, परिजन्म (Peri-natal), नवजात (Neo-natal) एवं नवजातोत्तर (Post-neonatal) मर्त्यता का अध्ययन, शिशु मर्त्यता में स्थानिक विभिन्नता का विश्लेषण, शिशु मर्त्यता को प्रभावित करने वाले जनांकिकीय, आर्थिक एवं सामाजिक कारकों का विश्लेषण, विभिन्न जातियों में शिशु मर्त्यता दर का आकलन जिले में ग्रामीण, पारिवारिक और व्यक्तिगत स्तर पर उपलब्ध जन सुविधाओं का शिशु मर्त्यता पर प्रभाव की व्याख्या, जिले में मातृत्व, शिशु एवं बाल कल्याण कार्यक्रमों का आकलन करना है।

भारत जैसे विकासशील देश में ग्रामीण समाज की संरचना अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामों में रहने वाले शिशु हमारे भविष्य की नींव है। जनसंख्या वृद्धि के मौलिक तीन घटक-प्रजननता, मर्त्यता और प्रवास हैं। मर्त्यता का जनसंख्या वृद्धि के साथ ही जनसंख्या संरचना विशेषकर आयु संरचना तथा जीवन प्रत्याशा से निकट संबंध होता है। मर्त्यता के जनांकिकीय महत्व तथा इसके अनेक सामाजिक-आर्थिक प्रभावों के फलस्वरूप भूगोलविद् इसके वितरण प्रतिरूप में अत्यधिक रूचि लेते हैं।

आज अनेक विकासशील देशों में चिकित्सा सुविधाओं में वृद्धि के फलस्वरूप मृत्यु दर में ह्रास हो रहा है। जन्म दर में हुई कमी की तुलना में मृत्यु दर में अधिक कमी देखी जा रही है। नगरीय क्षेत्रों में यह सफलता विशेषकर उल्लेखनीय है। किन्तु सामान्य स्वास्थ्य में विशेष सुधार नहीं हुआ है। विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में न केवल मृत्यु दर अधिक है बल्कि जीवन प्रत्याशा भी कम है।

आयु के अनुसार मृत्यु दर में अंतर पाया जाता है। भिन्न-भिन्न कारणों से कम आयु वर्ग में मृत्यु दर अधिक होती है तथा उसके बाद मृत्यु का दबाव घटने लगता है। शिशु मृत्यु दर किसी समुदाय की स्वास्थ्य दशाओं का एक उपयोगी एवं विश्वसनीय सूचक है। भारत में शिशु मृत्यु दर असाधारण रूप से अधिक है (28 प्रति हजार, एस.आर.एस. 2020) तथा ग्रामीण शिशु मर्त्यता 31 प्रति हजार है। मर्त्यता को प्रभावित करने वाले कारणों को दो वर्गों में रखा जा सकता है- प्रथम जैव और द्वितीय पर्यावरणीय। शिशु मृत्यु दर में अत्यधिक विभिन्नता दृष्टिगत होती है। मृत्यु अनेक जटिलताओं एवं अंतर्संबंधित कारणों का प्रतिफल है। अधिक शिशु मृत्यु दर के कारण भारतीय जनता परिवार नियोजन के स्थायी उपायों को अपनाने से डरते हैं।

भारत में जनसंख्या की अशिक्षा, रूढ़ीवादिता एवं अंधविश्वासों ने भारतीयों के स्वास्थ्य को कमजोर बना दिया है। भारत में चिकित्सा और जन स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी है। उपलब्ध सुविधाएँ सामान्य जनता से बहुत दूर है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में इनकी बहुत कमी है। भारत में मृत्यु संबंधी सूचनाओं एवं आँकड़ों के

SAMPLE

शुद्धता का स्तर सोचनीय है। मर्त्यता आँकड़ों का संकलन जन्म-मृत्यु पंजीकरण (Vital Statistics) पद्धति द्वारा होता है। पंजीकरण पद्धति अत्यधिक दोषपूर्ण है जिसमे अधिकांश मृत्यु की सूचनाएँ अपंजीकृत ही रह जाती है। पंजीकृत सूचनाएँ भी अपूर्ण होती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पोषण और शिशु देखभाल अक्सर अपर्याप्त होती है। बाल विवाह, लैंगिग भेदभाव और कुपोषण जैसी समस्याएं ग्रामीण शिशु मर्त्यता जीवन में बाधा उत्पन्न करती है। ऐसे में शिशु मर्त्यता सुनिश्चित करना न केवल एक नैतिक दायित्व है, बल्कि सामाजिक न्याय और सतत् विकास की दिशा में एक आवश्यक कदम है। इस अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण शिशु मर्त्यता से संबंधित समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करना, समाज में जागरूकता फैलाना और उन उपायों पर विचार कर उनके समाधान हेतु समाज, सरकार और परिवार की समिमलित जिम्मेदारी को पहचान करना है जिनसे हम एक बेहतर समावेशी और एक समृद्ध राष्ट्र का आधार बन सकता है।

—डॉ. टिके सिंह

नमूना • SAMPLE

1

भौगोलिक पृष्ठभूमि

1.1 स्थिति एवं विस्तार

सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ प्रदेश के उत्तर में $22^0 37' 22''$ से $24^0 16' 17''$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^0 35'$ से $84^0 51'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्राफल 15731 वर्ग कि.मी. है। 2001 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की कुल जनसंख्या 1972094 है। 1991-2001 के मध्य सरगुजा जिले की जनसंख्या में 24.6 प्रतिशत वृद्धि हुई है। जिले में प्रति हजार पुरूषों के पीछे स्त्रियों की संख्या 972 है। जिले की 54.8 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। जिले को 5 अनुविभागों, 9 तहसीलों एवं 19 विकासखण्डों में विभाजित किया गया है। जिले की 7 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। अंबिकापुर नगर जिले का प्रशासनिक केन्द्र है।

1.2 भूवैज्ञानिक संरचना

सरगुजा जिले में पाये जाने वाले शैल संस्तर आर्कियन, गोंडवाना, लमेटा तथा दक्कन लावा है। शैल समूहों के समकालीन है। यहाँ पर गोमेद, ग्रेनुलाइट, लेट्रीनाइट, पयराक्सीन, हार्नस्लेंड युक्त नाइस, क्वार्टजाइट विभिन्न संरचना वाली शिस्ट चुनाश्मयुक्त ग्रेनुलाइट, रवेदार चुना पत्थर आर्कियन समूह के अंतर्गत आते हैं। कोयला क्षेत्राों में ग्रिनिटिक नाइस तथा पारफिटिक ग्रेनाइट विच्छेदित नवांतशायी के रूप में पाए जाते हैं। विभिन्न कोयला क्षेत्राों में गोलाश्म संस्तरों की शैलों बलुआ पत्थर और कहीं-कहीं कार्बन युक्त तालचीर अंतर्गत महादेव शैल संस्तर आते हैं जो प्रदेश के लगभग एक-चौथाई उत्तरी भू-भाग में फैले हुए हैं। दक्कन संस्तरों को चारों तरफ से घेरे हुए तथा आर्कियन शैल संस्तरों पर विषम रूप से स्थित फेल्सपार युक्त बलुआ पत्थर तथा चुनाश्म ग्रिट स्तर है, जो लमेटा समूह के अंतर्गत आते हैं।

1.3 उच्चावच

धरातलीय रचना की दृष्टि से सरगुजा जिला विविध पहाड़ियों एवं पठारों से युक्त एक टेबल-लैण्ड (Table Land) है। प्रदेश के उत्तर-पूर्वी, पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्रा का धरातलीय स्वरूप उच्च-सम भूमि के रूप में है, जिसे पाट के नाम से जाना जाता है, जिसकी ऊँचाई 1152 मी. है। प्रदेश के मध्य भाग में अनेक नदियों

SAMPLE

(रिहन्द, कन्हार, हसदो, गोपद, बनास, मांड) की संकरी घाटियां है जो उत्तरी-पश्चिमी तथा दक्षिणी सीमाओं पर पटियों के रूप में फैली है। इन्हीं तीव्रगामी नदियों के अपक्षय एवं अपरदन क्रियाओं के फलस्वरूप अंत: पठारी बेसिन का विकास हुआ है जिससे यहाँ का उच्चावच एवं स्थलाकृति पूर्णत: प्रभावित है। प्रदेश में अनेक अवशिष्ट पहाड़ियाँ यत्र-तत्र मिलती है। ये ऊँचे प्रदेश दक्कन ट्रेप चट्टानों से ढके होने के कारण अनाच्छादन क्रियाओं से अप्रभावित है। यहाँ की सबसे ऊँची चोटी देवगढ़ की पहाड़ी है जो समुद्र सतह से 1370 मीटर ऊँची है तथा सबसे निचला स्थल उत्तर प्रदेश राज्य सीमा के निकट ढाबी (धारा) ग्राम है जो कि समुद्र सतह से मात्र 240 मीटर ऊँची है।

प्रादेशिक भू-रचना की दृष्टि से कुमार (1987) ने सरगुजा बेसिन को बघेलखण्ड पठार का अंश मानते हुए यहाँ फैले पहाड़ी एवं पठारी श्रृंखलाओं को छोटा नागपुर पठार की श्रेणियों का क्रम बताया। इसी तरह चटर्जी (1973) ने भी इस प्रदेश को बघेलखण्ड का अंग स्वीकार किया है। राय (1988) ने मिट्टी, भूगर्भिक संरचना, जलवायु एवं पाई जाने वाली वनस्पति के आधार पर इसे पाँच लघु प्रदेश में बाँटा है। सिंह (1991) ने सरगुजा प्रदेश को तृतीय स्तर के भौगोलिक प्रदेश में सीमांकित करते हुए इसे बघेलखण्ड पठारी प्रदेश का पूर्वी हिस्सा माना है। संरचनात्मक विसंगतियों एवं धरातलीय विविधताओं के आधार पर प्रदेश को निम्न भू-भौतिक विभागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. रिहन्द-कन्हार बेसिन
2. देवगढ़ की पहाड़ियाँ
3. सरगुजा बेसिन्
4. हसदो बेसिन
5. पाट प्रदेश
    i. मैनपाट
    ii. जरंगपाट
    iii. जमीरपाट
    iv. लहसून पाट

1. रिहन्द-कन्हार बेसिन

रिहन्द तथा उसकी सहायक नदियाँ-कन्हार, महान, मोरनी, गिरौनी, बॉन्की द्वारा रिहन्द-कन्हार बेसिन का निर्माण हुआ है, जो सरगुजा जिले के उत्तर में स्थित है। इस क्षेत्रा में रामचौरा (833 मीटर), ताइया (727 मीटर), पीपरा (610 मीटर) प्रमुख चोटियाँ हैं। उत्तर की ओर इसकी ऊँचाई क्रमश: कम हुई है। यहाँ पूर्वी क्षेत्रा में बलरामपुर विकासखण्ड (तातापानी) में सल्फर युक्त गरम-पानी का स्रोत है।

2. देवगढ़ की पहाडियाँ

देवगढ़ पहाडियाँ उत्तरी सूरजपुर, प्रतापपुर, उत्तरी अम्बिकापुर, दक्षिणी रामानुजगंज तथा पश्चिमी कुसमी तहसील में है। रिहन्द नदी के पश्चिम की ओर ये पहाड़ियाँ कई ऊँचे कटकों (Ridge) रूप में विस्तृत है। इन कटकों के बीच सँकरी गहरी घाटियाँ है जिसमें वर्षा ऋतु में ही जलापूर्ति होती है, शेष ऋतु में शुष्क होती है। पहाड़ियों के ऊँची चोटियों में देवगढ़ (1370 मीटर) और मुस्की (1086 मीटर) है। यहाँ फैली पहाड़ियाँ छोटा नागपुर के हजारीबाग की श्रेणियों का विस्तार है। देवगढ़ की पहाड़ियाँ एक प्रमुख जल विभाजक है। इसके दक्षिण में हसदो एवं उसकी सहायक नदियाँ तथा उत्तर की ओर बनास नदी प्रवाहित होती है, जो क्रमशः महानदी एवं सोन नदी की सहायक नदियाँ है।

3. सरगुजा बेसिन

सरगुजा बेसिन रिहन्द एवं सहायक नदियों द्वारा विकसित है, जिसकी ढाल दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम की ओर है।

4. हसदो बेसिन

हसदो बेसिन महानदी बेसिन का हिस्सा है। बेसिन की मुख्य नदी हसदो जिसकी उत्पत्ति कोरिया पहाड़ी के सोनहत पठार ($23^0 30'$ उत्तरय $82^0 30'$ पूर्व) से हुई है। इसकी सहायक नदी गेज है। यह नदी प्रक्षेत्रा के दक्षिणी-पश्चिमी भाग पर बहती हुई बिलासपुर जिले में महानदी में मिल जाती है। इसके पूर्वी एवं दक्षिणी किनारों पर कई जलप्रपात बनते हैं जिनमें अमृत धारा (30 मीटर) मुख्य है। बेसिन का सामान्य ढाल दक्षिण की ओर है। सूरजपुर तहसील का दक्षिण-पश्चिम भाग हसदो नदी द्वारा प्रवाहित होता है।

5. पाट प्रदेश

जिले के पूर्व, दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर विभिन्न पहाड़ियाँ एवं पाट अर्द्धचंद्राकार में फैले हैं। इन पाटों में बाक्साइट एवं लेटेराइट की अधिकता है। जिले के संपूर्ण बाक्साइट खदान इन्हीं पाटों में मिलते हैं। ऊँचाई एवं भौतिक विविधताओं की दृष्टि से पाट प्रदेश को चार भागों में विभक्त किया गया है।

अ. मैनपाट

सतपुड़ा-मैकल माला का क्रम मैनपाट प्रदेश की दक्षिणी-पूर्वी सीमा का निर्धारण करता है। यह पाट सीतापुर तहसील में विस्तृत है। यह 29 कि.मी. लम्बा एवं 12 कि.मी. चौड़ा है। इस पाट का कुल क्षेत्राफल 384 कि.मी. है, जो प्रदेश का सर्वाधिक वृहद पाट है। इस पाट की अधिकतम् ऊँचाई 1152 मीटर है। इसे छत्तीसगढ़ का शिमला कहते है। दक्कन ट्रेप से आच्छादित ग्रेनाइट, नीस संरचना वाली शैल यहाँ पाए जाते हैं। यहाँ की मुख्य पहाड़ी मतरिंगा (1088 मीटर) है। प्रदेश की सबसे बड़ी नदी रिहन्द का उद्गम इस पाट से हुआ है। यहाँ कई गहरी घाटियाँ, जलप्रपात एवं उच्च शिखरों से युक्त भू-दृश्य वर्तमान में पयर्टन स्थल बन गए हैं। समुद्र तल से अधिक ऊँचाई में स्थित होने के कारण अपनी विशिष्ट जलवायु लक्षणों की वजह से

ही इस क्षेत्रा में तिब्बती शरणार्थियों को 07 केम्पों में बसाया गया है। बाल्को बॉक्साइड, टाईगर पांइट, फीश पांइट, दलाईलामा मंदिर एवं मेहता पांइट इस पाट के अकर्षण केन्द्र है।

ब. जरंगपाट

समुद्र तल से जरंगपाट की औसत ऊँचाई 1145 मीटर है। रायगढ़ जिले में फैले पण्डरापाट (1033 मीटर) इसकी उत्तर-पश्चिम शाखा है। इस क्षेत्रा की नदी कन्हार है, जो इस पाट भूमि पर प्रवाहित होते हुए अनेक जलप्रपातों की रचना की है।

स. जमीरापाट (सामरीपाट)

कुसमी तहसील के सामरी क्षेत्रा में जमारीपाट का विस्तार है। अग्रवाल (1987) ने इसे सामरी पाट का नाम दिया है। इस पाट की औसत ऊँचाई 1103 मीटर है। दक्कन ट्रेप तथा लेटराइट यहाँ प्रमुख रूप से पाया जाता है। कन्हार नदी इस पार क्षेत्रा को लहसून पाट से अलग करती है। नदियों के शीर्ष अपरदन से पाट काफी विच्छेदित हो चुका है।

द. लहसून पाट

कुसमी तहसील के मध्य भाग में स्थित इस पाट की औसत ऊँचाई 1149 मीटर है। राजापहाड़ एवं रजबन्धा पहाड़ इस पाट का प्रमुख चोटियाँ है।

1.4 अपवाह तंत्र

सरगुजा जिले का जल दो नदी अपवाह प्रणालियों गंगा तथा महानदी अपवाह प्रणाली द्वारा प्रवाहित होता है।

1. गंगा अपवाह प्रणाली

सरगुजा जिले के उत्तर-पूर्वी, पश्चिमी तथा मध्यवर्ती भाग में गंगा प्रवाह प्रणाली मिलता है। इसके अंतर्गत जिले का 93.4 प्रतिशत भाग सम्मिलित है। सरगुजा जिले में प्रवाहित गंगा की मुख्य सहायक नदी सोन की सहायक कन्हार, रिहन्द (रेहर) आदि नदियाँ यहाँ प्रवाहित होती है।

अ. रिहन्द नदी

रिहन्द नदी सरगुजा जिले की सबसे बड़ी नदी है। यह नदी अध्ययन क्षेत्रा की जीवन रेखा है। रिहन्द नदी मैनपाट की मतरिंगा पहाड़ी (1088 मीटर) से निकलकर मध्य मैदान से होती हुई उत्तर की ओर प्रवाहित होती है। यह क्षेत्रा के एक बड़े भू-भाग को मैदानी स्वरूप प्रदान किया है। उत्तर में विस्तृत पर्वत श्रृखंला को काटती हुई 160 कि.मी. की दूरी तय कर उत्तरी सीमा में सोन नदी में मिल जाती है। इसकी पूर्वी छोर में मिलने वाली नदियाँ महान और मोरन है। पश्चिमी भाग में सहायक नदियाँ खरपारी, पीपरकछार, गोकनई तथा

SAMPLE

रामदरिया है। रेहर नदी वाड्रफनगर विकासखण्ड के बलंगी ग्राम के निकट 'रकसगण्डा' नामक जलप्रताप का निर्माण करती है। इस अपवाह क्रम में अध्ययन क्षेत्र का 65.4 प्रतिशत भाग सम्मिलित है।

ब. कन्हार नदी

कन्हार नदी जिले की दूसरी बड़ी नदी है। इसका उद्‌भव खुटियां पहाड़ के गिद्‌धा-ढ़ोढ़ी से हुआ है। यह नदी पहाड़ी क्षेत्रों से प्रवाहित होते हुए सामरी तहसील में प्रवेश करती है तथा सरगुजा के उत्तरी सीमा का निर्धारण करता है। रामानुजगंज के निकट झारखण्ड के गढ़वा (पलामू) जिले में सघन वनों के बीच बहती हुई मिर्जापुर के समीप सोन नदी में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियाँ खुरिया, चनाब, सेन्दुर, गुलफुल्ला, सेमरखार तथा चेरा हैं। इसका अपवाह क्षेत्र 3630 वर्ग कि.मी. है जो क्षेत्र के 22.9 प्रतिशत है। विजल नदी 810 वर्ग कि.मी. अर्थात 5.1 प्रतिशत क्षेत्र में प्रवाहित होती है।

2. महानदी अपवाह प्रणाली

समस्त जिले का दक्षिणी भाग महानदी प्रवाह प्रणाली के अंतर्गत आता है। सरगुजा जिले में महानदी की सहायक नदी-गेज, माँड तथा ईब प्रवाहित होती है। महानदी प्रवाह-प्रणाली का क्षेत्र जिले के कुल क्षेत्र का 6.6 प्रतिशत है।

अ. माँड नदी

माँड नदी मैनपाट के उत्तर-पूर्वी ढलानों से निकलकर पण्डरापाट होते हुए रायगढ़ जिले में प्रवेश करती हैं। इसका अपवाह क्षेत्र जिले के कुल क्षेत्रफल के केवल 800 वर्ग कि.मी. (5.0 प्रतिशत) है।

ब. गेज नदी

गेज नदी सरगुजा जिले के पश्चिमी पहाड़ी से निकलकर हसदो नदी में मिलती है। झिंक एवं अटेम इसकी अन्य सहायक नदियाँ है।

1.5 जलवायु

जलवायु भौतिक पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग है। जलवायु जनंसख्या वितरण, रहन-सहन, आर्थिक क्रिया का निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग से होकर कर्क रेखा गुजरती है। जिले में जलवायु संबंधी सभी विशेषताएँ प्रायः मानसूनी तथा उष्ण कटिबंध है। कोपेन के अनुसार सरगुजा जिला AW (उष्ण कटिबंधीय-उष्ण एवं शुष्क प्रकार) जलवायु के अंतर्गत है।

सरगुजा जिले में तीन ऋतुएँ मिलती है

1. ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक)
2. वर्षा ऋतु (मध्य जून से अक्टूबर तक)

SAMPLE

3. शीत ऋतु (नवम्बर से फरवरी तक)

सरगुजा जिले में जनवरी सबसे ठण्डा महीना होता है। जनवरी का औसत अधिकतम तापमान 22.50 सेल्सियस तथा औसत न्यूनतम तापमान 8.50 सेल्सियस है। किन्तु कभी-कभी जनवारी माह में शीत लहर के चलने से तापमान और भी कम हो जाता है (आरेख 1.1, अ)। इस स्थिति में कभी-कभी सरगुजा जिले के अधिकांश हिस्सों में तापमान 3.00 सेल्सियस तक पहुँच जाता है। मई का महीना सबसे गर्म महीना होता है। इस समय औसत अधिकतम तापमान 38.90 सेल्सियस तथा औसत न्यूनतम तापमान 23.10 सेल्सियस है। मई के महीने में दोपहर की अवधि में प्राय: लू का प्रभाव देखा जा सकता है।

सरगुजा जिले में वार्षिक वर्षा 1404.8 मि.मी. है। जुलाई तथा अगस्त माह में यहाँ अधिक वर्षा होती है। जिले में औसत 73 दिन वर्षा के होते है। जुलाई माह में औसत 434.8 मि.मी. तथा अगस्त माह में 2548.1 मि.मी. वर्षा होती है।

सरगुजा जिले में वर्षा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहाँ के मैनपाट एवं सीतापुर विकासखण्डों में मानसून की दोनों शाखाओं क्रमश: बंगाल की खाड़ी एवं अरब सागर से वर्षा होती है। सामान्यत: यहाँ पर आर्द्रता 75 प्रतिशत तक हुआ करती है। ग्रीष्मकाल में दोपहर के समय आर्द्रता में 25 प्रतिशत कमी आ जाती है।

सारणी 1.1

सरगुजा जिला : तापमान, 2006

क्र.	माह	औसत अधिकतम (^{o}C)	औसत न्यूनतम (^{o}C)
1	जनवरी	22.5	8.5
2	फरवरी	28.1	13.1
3	मार्च	31.9	16.6
4	अप्रेल	33.1	16.6
5	मई	38.9	23.1
6	जून	36.8	23.7
7	जुलाई	29.3	21.6
8	अगस्त	29.6	21.5
9	सितंबर	29.0	20.4
10	अक्टूबर	38.6	16.2
11	नवंबर	27.1	15.8
12	दिसंबर	24.2	14.5
औसत योग		**30.7**	**17.6**

(स्रोत : राजमोहिनी देवी कृषि अनुसंधान केन्द्र अजीरमा, अंबिकापुर)

1.6 मिट्टियाँ